Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 04, October, 2017, pp. 353-357

विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति क्षेत्र तथा लिंगगत भिन्नता के आधार पर विद्यालय प्रबन्ध समिति सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण

राजूकुमारी गौड*
डॉ. मुरलीधर मिश्रा**

सारांश

विद्यालय विकास में अपनी भूमिकाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय प्रबन्ध समिति सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण सार्थक रूप से भिन्न है? क्या विद्यालय विकास में अपनी भूमिकाओं के प्रति वि.प्र.स. के महिला एवं पुरुष सदस्य सार्थक रूप से भिन्न प्रत्यक्षीकरण रखते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति क्षेत्र तथा लिंगगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि से किये गये इस शोध अध्ययन में जयपुर जिले के कुल 30 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कुल 450 प्रबन्धन समिति सदस्यों में 225 ग्रामीण (104 पुरुष एवं 121 महिला) तथा 225 शहरी (99 पुरुष एवं 126 महिला) सदस्यों से संकलित मात्रात्मक प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं अनुमानात्मक सांख्यिकी के अन्तर्गत 'टी–परीक्षण' का उपयोग किया गया। निष्कर्षतः यह पाया गया कि विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति ग्रामीण तथा शहरी वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है जबकि पुरुष तथा महिला वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है। स्व–भूमिकाओं के प्रति शहरी सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण का मध्यमान ग्रामीण सदस्यों की तुलना में अधिक उच्च है अर्थात् विद्यालय विकास में वि.प्र.स. के ग्रामीण सदस्यों की तुलना में शहरी सदस्य स्व–भूमिकाओं के प्रति अधिक उच्च प्रत्यक्षीकरण रखते हैं।

प्रयुक्त शब्दावलीः विद्यालय विकास, विद्यालय प्रबन्धन समिति, क्षेत्रगत भिन्नता, लिंगगत भिन्नता, स्वभूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण, वर्णनात्मक सर्वेक्षण।

प्रस्तावना

स्थानीय समुदाय और विद्यालय के बीच की दूरी इतनी बढ गई थी कि जन मानस विद्यालय व्यवस्था को सरकार एवं उसके द्वारा संचालित विद्यालय का दायित्व मानकर विद्यालय की आधारभूत समस्याओं को देखकर भी अनदेखा कर देते थे। इसके परिणामस्वरूप धीरे–धीरे समुदाय की जिम्मेदारियों की अनदेखी से विद्यालय को समुदाय के सार्वजनिक संसाधन के रूप में स्वीकारोक्ति नहीं मिल पा रही थी। शिक्षा के अधिकार (आरटीई) अधिनियम 2009 की धारा 21 के तहत विद्यालय प्रबन्ध समिति (वि.प्र.स.) के गठन करने का प्रावधान किया गया है, जिसके अन्तर्गत स्थानीय स्तर पर विद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले निकाय का चुनाव किया जाता है। एसएमसी का मूल कार्य विद्यालय के कामकाज की निगरानी करना और विद्यालय में अनुदान के उपयोग की देखरेख करना है। विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार करने में स्थानीय समुदाय का व्यक्तिगत हित एवं प्रेरणा निहित होती है, इसलिए वि.प्र.स. के गठन में मुख्य रूप से शिक्षकों, स्थानीय प्राधिकरणों और विद्यालय के प्रधानाध्यापक के साथ–साथ अभिभावकों को भी शामिल किया जाता है।

* शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान।
** "एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान।

वि.प्र.स. से बढ़ती अपेक्षाओं के चलते विभिन्न शोधकर्ताओं ने वि.प्र.स. से सम्बन्धित विविध पक्षों को अपने अध्ययन का आधार बनाया है। यिरंग (2007) ने अरुणाचल प्रदेश की दिबांग घाटी के निचले जिले में प्राथमिक स्तर पर विद्यालय प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी पर सर्वशिक्षा अभियान के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में सर्वशिक्षा अभियान में सामुदायिक भागीदारी अपेक्षानुरूप नहीं पायी गयी, जबकि सर्वशिक्षा अभियान की उपलब्धि का बुनियादी आधार ही समुदाय की भागीदारी है। कर्नल टेरोन (2012) अपने अध्ययन में असम के गोलघाट जिले में एसएमसी के कामकाज का अध्ययन करते हुए पाया कि इनका गठन दिशानिर्देशों के अनुसार हुआ, नियमित बैठकों की व्यवस्था की गई, सदस्यों को उनकी भूमिकाओं और कार्यों के बारे में प्रशिक्षण दिया गया और सदस्य बैठकों के प्रति गंभीर हैं। कुमार (2016) ने हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में गठित वि.प्र.स. के कार्य एवं भूमिकाओं के वैयक्तिक अध्ययन में पाया कि यह समितियाँ नामांकन, ठहराव के लिए विद्यालयीन गतिविधियों की निगरानी एवं विकास की योजना निर्माण आदि कार्य कर रही हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि वि.प्र.स. कहीं अपेक्षानुरूप कार्य कर पा रही हैं और कहीं अपेक्षापूर्ति से दूर हैं। वि.प्र.स. अपनी भूमिकाओं को ठीक ढंग से निभा सके, इस क्रम में वि.प्र.स. के सदस्यों का स्वभूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण जिम्मेदार होता है। ऐसे में कतिपय प्रश्न उभरते हैं, यथा– क्या विद्यालय विकास में अपनी भूमिकाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी वि.प्र.स. सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण सार्थक रूप से भिन्न है? क्या विद्यालय विकास में अपनी भूमिकाओं के प्रति वि.प्र.स. के महिला एवं पुरुष सदस्य सार्थक रूप से भिन्न प्रत्यक्षीकरण रखते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति क्षेत्र तथा लिंगगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया।

अध्ययन उद्देश्य

सम्प्रत्ययात्मक रूपरेखा के आधार पर इस अध्ययन के अग्रांकित उद्देश्य निर्धारित किये गयेः–

- विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति क्षेत्रगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
- विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति लिंगगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

इस अध्ययन हेतु अग्रांकित परिकल्पनाओं का विकास किया गयाः–

- विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति क्षेत्रगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है।
- विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति लिंगगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है।

शोध विधि

विद्यालयीन विकास में प्रबन्धन समिति सदस्यों की स्वभूमिका के प्रति क्षेत्र तथा लिंगगत भिन्नता के आधार पर प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन एवं वर्णन करने के लिए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया।

न्यादर्श

शोध अध्ययन के न्यादर्श में जयपुर जिले के कुल 30 (15 ग्रामीण व 15 शहरी) राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रत्येक चयनित विद्यालय की प्रबन्धन समिति में सम्मिलित सभी 15 सदस्यों को गुच्छ रूप में न्यादर्श में चयनित माना गया। इस प्रकार अध्ययन के अन्तिम न्यादर्श में कुल 450 प्रबन्धन समिति सदस्यों में 225 ग्रामीण (104 पुरुष एवं 121 महिला) तथा 225 शहरी (99 पुरुष एवं 126 महिला) सदस्य चयनित हुए।

शोध उपकरण

क्षेत्र तथा लिंगगत भिन्नता के आधार प्रबन्धन समिति सदस्यों की स्वभूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण से संबंधित अभीष्ट प्रदत्तों का संकलन करने के लिए 'प्रबन्धन समिति सदस्यों की स्वभूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण मापनी' का निर्माण एवं प्रशासन किया गया।

प्रदत्तों की प्रकृति

इस अध्ययन में क्षेत्र तथा लिंगगत भिन्नता के आधार प्रबन्धन समिति सदस्यों की स्वभूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण से सम्बन्धित प्रदत्त मात्रात्मक रूप में प्राप्त हुए। इस प्रकार शोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक प्रकार की रही।

सांख्यिकीय की प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सांख्यिकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं अनुमानात्मक सांख्यिकी के अन्तर्गत 'टी–परीक्षण' का उपयोग किया गया।

परिकल्पना परीक्षण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 का परीक्षण एवं व्याख्या

क्षेत्रगत भिन्नता के आधार पर स्व–भूमिका के प्रति के प्रत्यक्षीकरण की तुलना करने के लिए ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयीन प्रबन्धन समितियों के सदस्यों द्वारा अध्ययन उपकरण पर प्राप्त अंकों का मध्यमान एवं मानक विचलन ज्ञात किया गया। प्राप्त मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता जाँचने के लिए 'टी' मूल्य का परिकलन किया गया। इस प्रकार प्रसंस्कृत प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण अग्रांकित तालिका 1 में किया गया हैः–

तालिका 1: स्व–भूमिका के प्रति क्षेत्रगत आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण

क्र. सं.	समूह	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य
1	ग्रामीण	225	237.18	18.01	5.83
2	शहरी	225	247.01	17.69	

मुक्तांश – 448, 0.05 तथा 0.01 के विश्वास स्तर पर तालिका मान क्रमशः 1.97 तथा 2.59

रेखाचित्र 1 : स्व–भूमिका के प्रति क्षेत्रगत आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण की तुलना

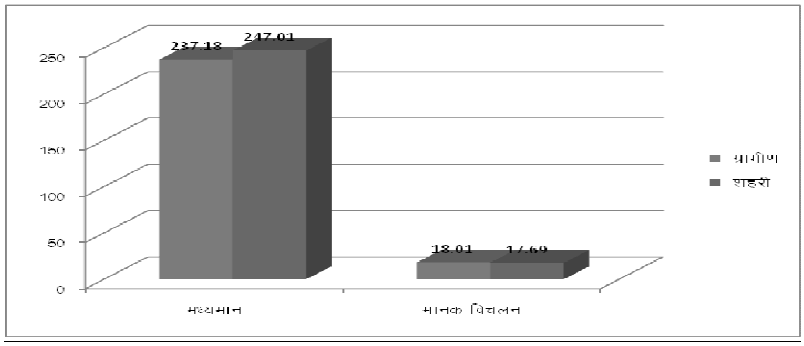

तालिका 1 एवं रेखाचित्र 1 की सहायता से ग्रामीण तथा शहरी राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की वि.प्र.स. सदस्यों का स्व–भूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति ग्रामीण सदस्यों का मध्यमान 237.18 और शहरी सदस्यों का मध्यमान 247.01 है तथा मानक विचलन क्रमशः 18.01 व 17.69 है। 'टी' का परिकलित मान 5.83 है जो कि न केवल 0.05 के विश्वास स्तर बल्कि पर 0.01 के विश्वास स्तर भी 'टी' के तालिका मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 1 'विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति क्षेत्रगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत नहीं होती है तथा शोध परिकल्पना 1 'विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति क्षेत्रगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है' स्वीकृत होती है। इससे यह सामान्यीकरण स्थापित होता है कि विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति ग्रामीण तथा शहरी वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है। शहरी सदस्यों के स्व–भूमिकाओं के प्रति प्रत्यक्षीकरण का मध्यमान ग्रामीण सदस्यों की तुलना में अधिक उच्च है अर्थात् विद्यालय विकास में वि.प्र.स. के ग्रामीण सदस्यों की तुलना में शहरी सदस्य स्व–भूमिकाओं के प्रति अधिक उच्च प्रत्यक्षीकरण रखते हैं।

परिकल्पना 2 का परीक्षण एवं व्याख्या

लिंगगत आधार पर स्व–भूमिका के प्रति के प्रत्यक्षीकरण की तुलना करने के लिए वि.प्र.स. के पुरुष तथा महिला सदस्यों द्वारा 'प्रबन्धन समिति सदस्यों की स्वभूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण मापनी' पर प्राप्त अंकों का मध्यमान एवं मानक विचलन ज्ञात किया गया। प्राप्त मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता जाँचने के लिए 'टी' मूल्य का परिकलन किया गया। इस प्रकार प्रसंस्कृत प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण अग्रांकित तालिका 2 में किया गया है–

तालिका 2 : लिंगगत आधार पर स्व–भूमिका के प्रति वि.प्र.स. सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण

क्र. सं.	समूह	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	कुल संख्या
1	पुरुष	204	241.48	18.05	203	0.684
2	महिला	246	242.60	16.58	245	

मुक्तांश – 448, 0.05 के विश्वास स्तर पर तालिका मान = 1.97

रेखाचित्र 2 : लिंगगत आधार पर स्व–भूमिका के प्रति वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण की तुलना

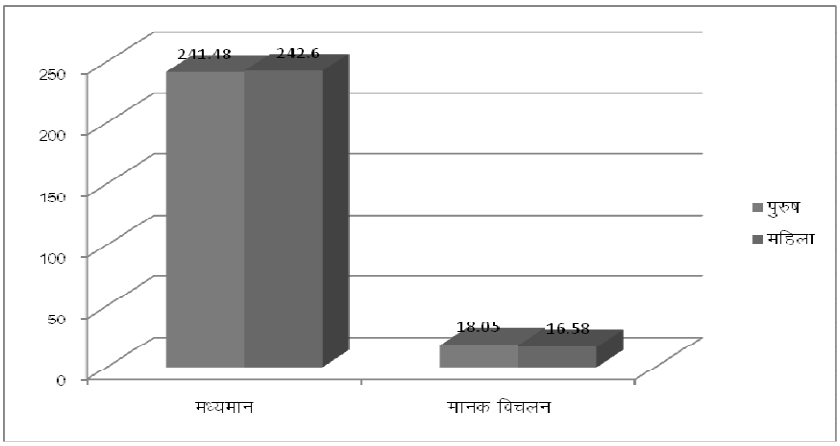

तालिका 2 एवं रेखाचित्र 2 के द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की वि.प्र.स. पुरुष तथा महिला सदस्यों का स्व–भूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति पुरुष सदस्यों का मध्यमान 241.48 और महिला वर्ग का सदस्यों का मध्यमान 242.60 है तथा मानक विचलन क्रमशः 18.05 व 16.58 है। 'टी' का परिकलित मान 0.684 है जो कि 0.05 के विश्वास स्तर पर 'टी' तालिका मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 2 'विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति लिंगगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत नहीं होती है तथा शोध परिकल्पना 2 'विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति लिंगगत भिन्नता के आधार पर वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है' अस्वीकृत होती है। इससे यह सामान्यीकरण स्थापित होता है कि विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति पुरुष तथा महिला वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है। हालांकि पुरुष तथा महिला सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण बिल्कुल एक समान नहीं पाया गया। महिला सदस्यों के स्व–भूमिकाओं के प्रति प्रत्यक्षीकरण का मध्यमान पुरुष सदस्यों की तुलना में अधिक उच्च है अर्थात् वि.प्र.स. के पुरुष सदस्यों की तुलना में महिला सदस्य विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति अधिक उच्च प्रत्यक्षीकरण रखती हैं।

परिचर्चा एवं निहितार्थ

इस अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया है कि विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति ग्रामीण तथा शहरी वि.प्र.स. सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है। शहरी सदस्यों के स्व–भूमिकाओं के प्रति प्रत्यक्षीकरण का मध्यमान ग्रामीण सदस्यों की तुलना में अधिक उच्च है अर्थात् विद्यालय विकास में वि.प्र.स. के ग्रामीण सदस्यों की तुलना में शहरी सदस्य स्व–भूमिकाओं के प्रति अधिक उच्च प्रत्यक्षीकरण रखते हैं। प्रत्यक्षीकरण मापनी पर ग्रामीण सदस्यों द्वारा व्यक्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि वि.प्र.स. सदस्यों को कृषि आदि कार्यों

में व्यस्तता के कारण बैठकों की समय पर जानकारी न मिल पाना, विद्यालयीन कार्यकलापों में अधिक रूचि न लेना, शिक्षक एवं सदस्यों के बीच वार्ता का अभाव, निर्धनता आदि कारणों की मौजूदगी होने के कारण सम्प्रेषण, मूल्यांकन व प्रतिवेदन सम्बन्धी भूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण शहरी वि.प्र.स. सदस्यों की तुलना में कम पाया गया है। ग्रामीण विद्यालयों के विकास को गति देने में वि.प्र.स. सदस्यों का अहम योगदान हो सकता है। विद्यालयों के विकास को गति देने में विद्यालय प्रबन्धक समिति सदस्यों की सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए बैठक भत्ते एवं पुरस्कार आदि का प्रावधान किया जा सकता है।

विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति वि.प्र.स. के पुरुष तथा महिला सदस्यों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है। हालांकि पुरुष तथा महिला सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण बिल्कुल एक समान भी नहीं पाया गया है। महिला सदस्यों के स्व–भूमिकाओं के प्रति प्रत्यक्षीकरण का मध्यमान पुरुष सदस्यों की तुलना में अधिक उच्च है अर्थात् वि.प्र.स. के पुरुष सदस्यों की तुलना में महिला सदस्य विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति अधिक उच्च प्रत्यक्षीकरण रखती हैं। यह अच्छा संकेत है। वि.प्र.स. के पुरुष तथा महिला सदस्यों का विद्यालय विकास में स्व–भूमिकाओं के प्रति अधिक उच्च प्रत्यक्षीकरण रखना इस बात का परिचायक है कि अवसर मिलने पर महिला सदस्य भी विद्यालयीन विकास में अहम् भूमिका निभा सकती हैं। वे विद्यालयीन विकास हेतु नियोजन, संगठन, क्रियान्वयन, सम्प्रेषण, परिवीक्षण, मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन लेखन जैसी अपनी भूमिकाओं के प्रति पर्याप्त रूप से संवेदनशील हैं। वि.प्र.स. के पुनर्गठन करते समय महिला सदस्यों को और अधिक प्रतिनिधित्व प्रदान किया जा सकता है।

अपनी भूमिकाओं के प्रति विद्यालय प्रबन्ध सदस्यों का सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण होना शुभ संकेत है। इससे वे विद्यालय के प्रबन्धन से संबंधित सभी कार्यों (नियोजन, संगठन, क्रियान्वयन, परिवीक्षण, सम्प्रेषण, मूल्यांकन) सम्बन्धी अपनी भूमिकाओं का भलीभाँति निर्वाह कर सकते हैं। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में प्रबन्ध समिति के महिला व पुरुष सदस्य विद्यालय विकास में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा कर सभी प्रकार की कमियों की पूर्ति का प्रयास कर सकते हैं। वि.प्र.स. नामांकन, ठहराव, संसाधनों की सुलभता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण तथा बालिका सहित वंचित वर्ग की शिक्षा के विकास पर बल दे विद्यालय विकास में अपना अनुपम योगदान दे सकती है।

सन्दर्भ सूचीः–

- ईरांग (2007). इम्पैक्ट ऑफ़ एसएसए ऑन कम्युनिटी पार्टिसिपेशन इन स्कूल मैनेजमेंट अट प्राइमरी लेवल इन थी डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ लोअर दिबांग वैली ऑफ़ अरुणाचल प्रदेश, साइटेड बाय कुमार, सुनील (2016). रोल्स एंड फंक्शन्स ऑफ़ स्कूल मैनेजमेंट कमिटीज (एसएमसी'ज) ऑफ़ गवर्नमेंट मिडिल स्कूल्स इन डिस्ट्रिक्ट कुल्लू ऑफ़ हिमाचल प्रदेश रू अ केस स्टडी, आग–सितम्बर, 3(17), 3879.
- बाज़िक (2005). रोल एंड फंक्शनिंग ऑफ़ स्कूल कमिटीस इन इम्प्रूविंग एलीमेंट्री एजुकेशन–अ स्टडी ऑफ़ मयूरभंज डिस्ट्रिक्ट इन उड़ीसा, साइटेड बाय कुमार, सुनील (2016). रोल्स एंड फंक्शन्स ऑफ़ स्कूल मैनेजमेंट कमिटीस (एसएमसी'ज) ऑफ़ गवर्नमेंट मिडिल स्कूल्स इन डिस्ट्रिक्ट कुल्लू ऑफ़ हिमाचल प्रदेश रू अ केस स्टडी, आग–सितम्बर, 3(17), 3879.
- भारत सरकार (2009). शिक्षा का अधिकार अधिनियम एक्ट, http://www.archive.india.gov.in/hindi/citizen/education.php?id=38
- कर्नेल, टेरों (2012). स्टडी ऑफ़ दा फंक्शनिंग ऑफ़ एसएमसी'ज इन दा गोलाघाट डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ असमः अ रिसर्च स्टडी, नई दिल्लीः एनयूईपीए.
- शर्मा, सुशीला (2011–12). विद्यालय प्रबन्ध समिति सदस्यों की स्व भूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण, अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध, वनस्थलीः वनस्थली विद्यापीठ, शिक्षा संकाय.

❑❑❑